बीएसईएस इलाके में
7000 किलोवॉट तक पहुंचा सौर ऊर्जा का उत्पादन

नई दिल्लीः 12 अक्टूबर, 2016। बीएसईएस इलाके में सौर ऊर्जा का उत्पादन 7000 किलोवॉट तक पहुंच चुका है। उपभोक्ताओं के घरों/ दफ्तरों की छतों पर लगे सौर ऊर्जा के 206 प्लांटों के माध्यम से इतनी बिजली का उत्पान हो रहा है। इन प्लांटों को नेट मीटरिंग के माध्यम से ग्रिड से कनेक्ट किया जा चुका है। इसके अलावा, 50 और नए प्लांट लगने की प्रक्रिया में हैं। उन्हें भी जल्द ही ग्रिड से कनेक्ट कर दिया जाएगा। सौर ऊर्जा का उत्पादन शुरू करने वाले उपभोक्ताओं में ज्यादातर घरेलू उपभोक्ता और नामी स्कूल व शैक्षिक संस्थान हैं।

बीएसईएस क्षेत्र के कई नामी स्कूलों व शिक्षण संस्थानों ने सौर ऊर्जा/ नेट मीटरिंग के कनेक्शन लिए हैं। उनका सैंक्शंड लोड 1000 किलोवॉट से भी अधिक है। नेट मीटरिंग कनेक्शन लेने वाले प्रमुख स्कूलों में शामिल हैं– वसंत वैली, टैगोर इंटरनैशनल, न्यू एरा पब्लिक स्कूल, फादर ऐग्नेल स्कूल, वेंकटेश्वरा स्कूल, भटनागर इंटरनैशनल स्कूल, सेंट सीसीलिया पब्लिक स्कूल, ईस्ट पॉइंट स्कूल, विवेकानंद पब्लिक स्कूल, एमएस मुखर्जी मेमोरियल स्कूल, आदि।

सीधे ग्रिड से जुड़ेगा आपका सौर ऊर्जा प्लांट

आमतौर पर सौर ऊर्जा की बिजली का या तो उसी वक्त इस्तेमाल किया जाता है, या फिर उस ऊर्जा को बैटरी में स्टोर करके उसे बाद में उपयोग के लिए रखा जाता है। इस प्रक्रिया में बैटरी पर अच्छी– खासी लागत आती है। लेकिन, बीएसईएस उपभोक्ताओं को सौर ऊर्जा को स्टोर करने के लिए बैटरी पर पैसे खर्च करने की जरूरत नहीं है। क्योंकि, उनके इस्तेमाल के बाद बची हुई बिजली नेट मीटरिंग के माध्यम से वापस बीएसईएस के ग्रिड में चली जाएगी। उपभोक्ता के सोलर पैलनों से जितनी बिजली बीएसईएस के ग्रिडों में आएगी, उसके लिए उसे बीएसईएस, डीईआरसी द्वारा अप्रूव्ड दरों पर भुगतान भी करेगी।

सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए जरूरी चीजें:

एक किलोवॉट क्षमता वाले सौर ऊर्जा प्लांट के लिए आपको 10 वर्गमीटर के रूफटॉप की जरूरत होगी। अधिक रोशनीदार छत चाहिए, जहां छाया न हो। सौर ऊर्जा प्लांट पर, आमतौर पर 80,000 रूपये प्रति किलोवॉट की लागत आती है। सौर ऊर्जा प्लांट का सेटअप स्थापित करने से पहले या बाद में भी आप नेट मीटरिंग के लिए डिस्कॉम को आवेदन दे सकते हैं।

कहां दें आवेदन

जिन उपभोक्ताओं के पास सौर ऊर्जा का सेटअप है, वे अपने डिस्कॉम को नेट मीटरिंग के लिए आवेदन दे सेकते हैं। नेट मीटरिंग के लिए एक फॉर्म है, जिसे बीएसईएस की वेबसाइहट www.bsesdelhi.com से डाउनलोड किया जा सकता है। भरा हुआ फॉर्म 500 रूपये के तय शुल्क के साथ डिस्कॉम के मीटरिंग सेल में जमा कराया जा सकता है। यदि तकनीकी रूप से संभव है, तो इंस्टॉलेशन के पश्चात, जरूरी व्यावसायिक औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद, नेट मीटर लगाने में सामान्यतया 15 दिनों को वक्त लगता है।

सौर ऊर्जा के उपयोग से लाभः

सौर ऊर्जा का बेहतर इस्तेमाल कर उपभोक्ता अपने बिजली बिलों में भारी कमी ला सकते हैं। आप सौर ऊर्जा का जितना अधिक उत्पादन करेंगे, आपके बिजली बिल में उतनी ज्यादा कमी आएगी। जैसे कि, अगर कोई उपभोक्ता महीने में 500 यूनिट बिजली की खपत करता है और वह 400 यूनिट सौर ऊर्जा का उत्पादन करता है, तो महीने के अंत में वह डिस्कॉम को सिर्फ 100 यूनिट के बिल का भुगतान करेगा।

बीएसईएस प्रवक्ता के मुताबिक, सौर ऊर्जा नेट मीटरिंग में उपभोक्ताओं की दिलचस्पी काफी उत्साहवर्धक है। उपभोक्ताओं को अब सौर ऊर्जा नेट मीटरिंग का लाभ मिलना शुरू हो चुका है। इसलिए, इसकी लोकप्रियता और बढ़ने वाली है। गौरतलब है कि बीएसईएस ने लोगों ने 1 किलोवॉट से लेकर 1000 किलोवॉट तक के सौर ऊर्जा नेट मीटरिंग कनेक्शन लिए हैं।

इस पहल के विचारों और उद्देश्यों के प्रति बीएसईएस पूरी तरह प्रतिबद्ध है। बीएसईएस देश की उन चुनिंदा कंपनियों में शामिल है, जो नेट मीटरिंग को जोर– शोर से आगे बढ़ा रही है। बीएसईएस नेट मीटरिंग के लाभों को न सिर्फ बड़े पैमाने पर उपभोक्ताओं के बीच प्रचारित कर रही है, बल्कि सौर ऊर्जा प्लांट लगाने की प्रक्रिया के बारे में भी उन्हें जागरूक कर रही है।

अक्षय ऊर्जा को लेकर भारत सरकार और दिल्ली सरकार, दोनों के ही महत्वाकांक्षी योजनाएं व कार्यक्रम हैं। सिर्फ बीएसईएस इलाके में ही 250–300 मेगावॉट रूफ टॉप सौर ऊर्जा मिलने की संभावनाएं मौजूद हैं।

दिल्ली की प्रमुख बिजली वितरण कंपनियां बीआरपीएल और बीवाईपीएल आर–इंफ्रा तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के बीच संयुक्त उद्यम हैं।